राजभवन में आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल महोदय का सम्बोधन

(दिनांक 17 सितम्बर, 2024)

जय हिन्द!

आज के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मैं प्रसन्नता और गर्व की अनुभूति कर रहा हूँ।

आज के इस अवसर पर हम यहां तीन विषयों के शुभारंभ के लिए उपस्थित हुए हैं, जिसे मैं शिवजी के त्रिशुल के रूप में देखता हूँ। ये तीन विषय हैं– उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय द्वारा सभी राज्य विश्वविद्यालयों के लिए तैयार किए गए डैशबोर्ड, डॉ रमेश पोखरियाल ''निशंक'' जी द्वारा लिखित पुस्तक ''राष्ट्रीय एकता और हिंदी भाषा'' और राजभवन की तकनीकी पहलों पर आधारित ''The ADVENT OF ADVANCED ADMINISTRATIVE Intelligence'' कॉफी टेबल बुक का विमोचन जो अभी–अभी आप सभी के सामने सम्पन्न हुए हैं। मैं इस अवसर पर आप सभी को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

मुझे हार्दिक खुशी है कि उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय द्वारा सभी राज्य विश्वविद्यालयों के लिए एक कॉमन डैशबोर्ड तैयार किया गया है जिससे सभी विश्वविद्यालय अपनी आधारभूत सुविधाएं, प्रवेश, एमओयू,

बेस्ट प्रैक्टिसेज, कार्यक्रम, विषय–विशेषज्ञ, सूचनाएं, शोध और विकास को आपस में और राजभवन के साथ ऑनलाइन माध्यम से साझा कर सकेंगे। पूर्व में यह एक मोबाइल एप के रूप में भी कार्य कर रहा था इसे अब डैशबोर्ड का स्वरूप दिया गया है।

मैं इस कार्य को लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए यूटीयू को बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि सभी विश्व विद्यालय इसका अधिक से अधिक लाभ उठाकर शिक्षा में गुणवत्ता को बढ़ावा देंगे।

मेरा मानना है कि राजभवन के माध्यम से की गई पहलों को दर्शाती, एआई–आधारित The ADVENT OF ADVANCED ADMINISTRATIVE Intelligence'' शीर्षक वाली कॉफी टेबल बुक उत्तराखंड के डिजिटल भविष्य के निर्माण की प्रतिबद्धता की कहानी है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक उत्तराखंड की तकनीकी प्रगति और परिवर्तन के लिए प्रेरणा देने का कार्य करेगी।

आज के इस पावन अवसर पर हम यहाँ पर हिंदी को समर्पित एक ऐसी प्रतिभा का अभिनन्दन कर रहे हैं जिन्होंने अपने सामाजिक, राजनैतिक जीवन की अनेक ऊंचाइयों को छूकर उत्तराखंड एवं हम सबको गौरवान्वित किया है।

साथियों,

मैं हमेशा ही इस बात को कहता हूँ कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति उत्तराखंड से आयी है। पूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखंड एवं पूर्व शिक्षा मंत्री भारत सरकार डॉ. रमेश पोखरियाल ''निशंक'' एक बहुमुखी लेखक और साहित्यकार हैं, जिनकी 120 से अधिक पुस्तकें हमारे समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं। उनकी ''राष्ट्रीय एकता और हिंदी भाषा'' पुस्तक का लोकार्पण एक विशेष अवसर है, जो देश की एकता और भाषा की महत्ता को उजागर करता है।

भारत के शिक्षा मंत्री के रूप में उनकी उल्लेखनीय भूमिका ने हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने हिंदी भाषा को न केवल साहित्यिक और सांस्कृतिक मंचों पर, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी मजबूती प्रदान की है, यह प्रसन्नता की बात है कि उनके कार्यकाल में संस्कृत को द्वितीय राजभाषा बनाया गया।

डॉ. निशंक का राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने में विशेष योगदान रहा है। उन्होंने न केवल हिंदी माध्यम से इंजीनियरिंग और एमबीबीएस जैसे तकनीकी और चिकित्सा क्षेत्रों में शिक्षा के लिए रूपरेखा तैयार की, बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं के समावेश और सम्मान को भी प्राथमिकता दी। उनकी इस दूरदर्शिता ने देश की भाषाई विविधता को सशक्त करने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ किया है।

साथियों,

हिन्दी भारत की आत्मा ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक भी है। यह स्वाभाविक सी बात है कि वही भाषा राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने में समर्थ हो सकती है जो सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली, पढी व समझी जाने हो। हिंदी आत्मीयता की भाषा के साथ भारतीय संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है।

हम सभी जानते हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है, जिसके विशाल विस्तार में 1,600 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। सबसे अच्छी बात मुझे यह लगती है है कि हिंदी में ही वह क्षमता है जो राष्ट्र की समावेशी भावना को सुरक्षित रखते हुए क्षेत्रीय भाषाओं को भी सरंक्षित संवर्धित कर सकती है।

कई बार मैं सोचता हूँ कि विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं की भूमि भारत में हिंदी अद्भुत एकता का प्रमाण है। आज जम्मू कश्मीर से लेकर तमिलनाडु, अरुणाचल से लेकर गुजरात तक एक भाषा में आप अगर संवाद कर सकते हैं तो वह हिंदी है।

स्वतंत्रता संग्राम के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अंग्रेजों को भगाने में कलमकारों ने अपनी अहम भूमिका निभाई। क्रांतिकारियों

से लेकर देश के आम लोगों के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों से जोश भरा और लोगों ने अपना तन मन धन राष्ट्र के लिए न्योछावर कर दिया।

भारत विविधताओं में एकता का अनूठा उदाहरण है। यहाँ विभिन्न धर्म, भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ मिलकर एक ऐसा सुंदर ताना–बाना बुनते हैं, जो इसे दुनिया में विशिष्ट बनाता है। भाषा हमारी पहचान और सांस्कृतिक धरोहर का अहम हिस्सा है। हिंदी, भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ विभिन्न प्रांतों और संस्कृतियों के बीच संवाद का सेतु है। यह न केवल आपसी समझ बढ़ाती है, बल्कि राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करती है।

मेरा मानना है कि एकजुटता से ही राष्ट्र का विकास और शांति संभव है। हिंदी के सरंक्षण और संवर्धन से हम मिलकर हर तरह की भेदभावपूर्ण मानसिकता को समाप्त कर, भाषाई विविधता का सम्मान करते हुए राष्ट्रीय एकता को और मजबूत कर सकते हैं।

आइए! हम सभी मिलकर प्रयास करें कि आपसी सौहार्द के वातावरण में हिंदी के माध्यम से एकजुट होकर पुनः विश्व गुरु के वैभव को प्राप्त करे।

साथियों,

वर्तमान समय में तकनीकी का महत्व अभूतपूर्व रूप से बढ़ गया है। तकनीक ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है, चाहे वह शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, या मनोरंजन हो।

इसके माध्यम से हमें न केवल सुविधा मिली है, बल्कि दुनिया भर में संपर्क और संवाद करना भी आसान हो गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में, तकनीकी ने ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल क्लासरूम की अवधारणा को बढ़ावा दिया है। अब विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से कहीं से भी पढ़ सकते हैं और विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। इससे न केवल शिक्षा सुलभ हुई है बल्कि इसे किफायती भी बनाया गया है।

हम देख रहे हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रशासन की कार्यकुशलता, पारदर्शिता और शासन में सार्वजनिक भागीदारी में उल्लेखनीय सुधार करके प्रशासनिक प्रक्रियाओं में क्रांति ला रहा है।

एआई मानवीय त्रुटियों को कम करने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को गति देने में मदद कर रहा है, जिससे सरकारें सेवाओं को अधिक तेज़ी से और सटीक रूप से वितरित कर पाती हैं।

इस कॉफी–टेबल बुक में दर्ज की गई यात्रा, राजभवन, राज्य भर के कॉलेजों में हमारी प्रणालियों और प्रक्रियाओं को आधुनिक बनाने और सुव्यवस्थित करने के साथ–साथ चार धामों में तीर्थयात्रा के अनुभव को बढ़ाने और सुगम बनाने के लिए एक दृढ़ प्रयास को दर्शाती है।

ये पहल केवल तकनीकी प्रगति नहीं हैं, ये डिजिटल रूप से सशक्त उत्तराखंड के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं। हमारा दृष्टिकोण उत्तराखंड की सीमाओं से परे है। हमने यहां जो प्रगति की है, वह डिजिटल परिवर्तन के लिए एक मॉडल के रूप में पूरे देश को प्रेरणा दे सकती है।

मैं इन पहलों को साकार करने में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आपकी लगन, विशेषज्ञता और उत्कृष्टता की निरंतर खोज ने इस दृष्टिकोण को साकार कर दिया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तकनीकी को भारत की प्रगति और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्होंने कई बार यह विचार व्यक्त किया है कि तकनीकी न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में सहायक है, बल्कि यह नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने का भी साधन है।

मोदी जी का मानना है कि तकनीकी स्टार्टअप्स भारत के युवाओं के लिए रोजगार और नवाचार के नए अवसर उत्पन्न कर सकते हैं। उनके अनुसार, स्टार्टअप्स का बढ़ावा देकर भारत को तकनीकी नवाचार के केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

उत्तराखंड के राज्यपाल के रूप में, मेरा लक्ष्य हमारे राज्य को भारत की डिजिटल क्रांति में सबसे आगे रखना है। अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाकर और नवाचार को बढ़ावा देकर, हमारा लक्ष्य उत्तराखंड को डिजिटल उत्कृष्टता के अग्रणी केंद्र में बदलना है।

हमारा ध्यान विभिन्न क्षेत्रों में एआई और डिजिटल समाधानों को एकीकृत करने, सुशासन, सतत विकास को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास को गति देने पर है। आइए! साथ मिलकर, हम एक डिजिटल क्रांति का मार्ग प्रशस्त करना जारी रखेंगे, जिससे आने वाली पीढ़ियों को लाभ होगा।

कुल मिलाकर, तकनीकी ने हमारे जीवन को सहज, तेज़ और अधिक प्रभावी बनाया है। इसके बिना आज की आधुनिक दुनिया की कल्पना करना कठिन है, और निश्चित ही भविष्य में इसका महत्व और भी बढ़ने वाला है।

अंत में, मैं इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में आप सभी की गरिमामयी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

जय हिन्द!